

# गोंड जनजातीय गीतों में परंपरा और आधुनिकता

## छिंदवाड़ा जिले का सांस्कृतिक अध्ययन

<sup>1</sup> श्रीमती इमला नौर,<sup>2</sup> डॉ. शोभना जैन

<sup>1</sup> शोधार्थी (हिन्दी),<sup>2</sup> शोध निर्देशक

<sup>1</sup> हिन्दी

<sup>1</sup> बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

### शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र छिंदवाड़ा जिले के गोंड जनजातीय गीतों में निहित परंपरा और आधुनिकता के सह-अस्तित्व का सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। गोंड जनजातीय गीत लोकसंस्कृति की मौखिक परंपरा के अंतर्गत विकसित हुए हैं और समाज की सामूहिक स्मृति, जीवन-दर्शन, धार्मिक आस्था तथा सामाजिक मूल्यों के प्रमुख संवाहक रहे हैं। इन गीतों के माध्यम से गोंड समाज अपने दैनिक जीवन, कृषि कर्म, पर्व-त्योहार, विवाह-संस्कार और प्रकृति से जुड़े अनुभवों को अभिव्यक्त करता है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि गोंड गीतों में परंपरागत तत्व जैसे देवी-देवताओं की आराधना, प्रकृति-पूजन, सामुदायिक जीवन और नैतिक शिक्षाकृआज भी सशक्त रूप में विद्यमान हैं। साथ ही, आधुनिक युग के प्रभाव स्वरूप शिक्षा, शहरी संपर्क, रोजगार की आकांक्षा, तकनीकी साधनों और प्रस्तुति की नवीन शैलियों का समावेश भी गीतों में दिखाई देता है। इस प्रकार गोंड जनजातीय गीत परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करते हुए अपनी सांस्कृतिक प्रासंगिकता बनाए रखते हैं।

यह शोध गुणात्मक एवं वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक स्रोतों के रूप में लोकगीतों और मौखिक परंपरा तथा द्वितीयक स्रोतों के रूप में संबंधित साहित्य का अध्ययन किया गया है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि छिंदवाड़ा जिले के गोंड जनजातीय गीत न केवल सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षक हैं, बल्कि बदलते सामाजिक परिवेश में भी अपनी जीवंतता और निरंतरता बनाए हुए हैं।

**कुंजी शब्द :** गोंड जनजातीय गीत, परंपरा, आधुनिकता, लोकसंस्कृति, छिंदवाड़ा

### प्रस्तावना

भारत की जनजातीय संस्कृति मौखिक परंपरा पर आधारित रही है, जहाँ लोकगीत सामाजिक जीवन के अभिन्न अंग होते हैं। गोंड जनजाति मध्य भारत की एक प्राचीन और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध जनजाति है, जिसकी पहचान उसके गीतों, नृत्यों और लोकविश्वासों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। छिंदवाड़ा जिला गोंड जनजातीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है, जहाँ लोकगीत आज भी सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन को दिशा प्रदान करते हैं (सिंह, 2018)।

गोंड जनजातीय गीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि वे समाज की सांस्कृतिक स्मृति, जीवन-दर्शन और सामूहिक चेतना के वाहक हैं। इन गीतों के माध्यम से गोंड समाज अपने दैनिक जीवन, कृषि कर्म, पर्व-त्योहार, विवाह-संस्कार और प्रकृति के प्रति अपने गहरे लगाव को अभिव्यक्त करता है। उदाहरणस्वरूप, एक पारंपरिक गीत में प्रकृति-पूजन की भावना इस प्रकार प्रकट होती है -

“बड़ा देव बैठा डोंगर माई, नदी-नाला हरियर होई”

इस प्रकार की पंक्तियाँ गोंड समाज के प्रकृति-केंद्रित जीवन दृष्टिकोण को उजागर करती हैं, जहाँ जंगल, नदी और पर्वत केवल प्राकृतिक तत्व नहीं, बल्कि पूज्य माने जाते हैं (सिन्हा, 2015)।

गोंड गीतों में सामाजिक संस्कारों का भी विशेष स्थान है। विवाह और उत्सवों के अवसर पर गाए जाने वाले गीत सामूहिकता और सामाजिक समन्वय की भावना को सुदृढ़ करते हैं। एक विवाह गीत की पंक्तियाँ देखें -

“ढोल बजे, मांदर गूंजे, दुल्हा-दुल्हन घर में पूंजे”

ऐसे गीत न केवल उत्सव का वातावरण रचते हैं, बल्कि सामाजिक परंपराओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित भी करते हैं (शर्मा, 2020)।

समकालीन परिदृश्य में गोंड समाज आधुनिकता के प्रभाव से अछूता नहीं है। शिक्षा, शहरी संपर्क, रोजगार और तकनीकी साधनों के प्रभाव से गोंड गीतों की विषयवस्तु और प्रस्तुति शैली में परिवर्तन दिखाई देने लगा है। कुछ आधुनिक गीतों में बच्चों की पढ़ाई, शहर जाने की आकांक्षा और नए जीवन अनुभवों की अभिव्यक्ति इस प्रकार मिलती है -

“बेटा पढ़े शहर स्कूल में, मां सपना देखे उज्जर कल में”

यह स्पष्ट करता है कि गोंड गीत परंपरा को बनाए रखते हुए आधुनिक जीवन की आकांक्षाओं को भी आत्मसात कर रहे हैं (सिंह, 2018)।

इस प्रकार छिंदवाड़ा जिले के गोंड जनजातीय गीतों में परंपरा और आधुनिकता का सह-अस्तित्व स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। एक ओर जहाँ ये गीत आदिवासी समाज की सांस्कृतिक जड़ों को सशक्त बनाए रखते हैं, वहीं दूसरी ओर बदलते सामाजिक परिवेश के साथ स्वयं को अनुकूलित भी करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इसी सांस्कृतिक संतुलन को समझना और गोंड गीतों के माध्यम से समाज की जीवंत पहचान को रेखांकित करना है। अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

गोंड जनजातीय समाज भारतीय जनजातीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसकी सांस्कृतिक पहचान उसके लोकगीतों, लोकनृत्यों और मौखिक परंपराओं में निहित है। गोंड लोकगीत समाज की सामूहिक स्मृति, सामाजिक अनुभवों और जीवन-दर्शन के संवाहक रहे हैं। परंतु आधुनिक समय में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण इन लोकगीतों की प्रकृति, विषयवस्तु और प्रस्तुति शैली में निरंतर परिवर्तन हो रहा है। ऐसे परिवर्तनों के संदर्भ में गोंड जनजातीय गीतों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो गया है (सिंह, 2018)।

छिंदवाड़ा जिला गोंड जनजाति की सांस्कृतिक गतिविधियों का एक प्रमुख क्षेत्र है, जहाँ आज भी लोकगीत सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग बने हुए हैं। विवाह, पर्व-त्योहार, कृषि कार्य और धार्मिक अनुष्ठानों में गीतों की उपस्थिति यह दर्शाती है कि गोंड समाज में लोकगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक अनुशासन और सांस्कृतिक शिक्षा का माध्यम हैं। इसके बावजूद, छिंदवाड़ा जिले के संदर्भ में गोंड गीतों में परंपरा और आधुनिकता के समन्वित अध्ययन पर सीमित शोध उपलब्ध है, जो इस अध्ययन की आवश्यकता को रेखांकित करता है (सिन्हा, 2015)।

आधुनिक शिक्षा, शहरीकरण, संचार माध्यमों और तकनीकी साधनों के प्रसार ने गोंड समाज के जीवन-शैली में परिवर्तन किया है। इस परिवर्तन का प्रभाव लोकगीतों पर भी पड़ा है। आज कई गोंड गीतों में शिक्षा, रोजगार, शहर की ओर पलायन और आधुनिक जीवन की आकांक्षाओं का उल्लेख मिलने लगा है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि लोकगीत केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान की संवेदनाओं को भी अभिव्यक्त कर रहे हैं (शर्मा, 2020)। इन परिवर्तनों का सांस्कृतिक दृष्टि से अध्ययन करना आवश्यक है, ताकि यह समझा जा सके कि लोकसंस्कृति किस प्रकार आधुनिकता को आत्मसात करती है।

इस अध्ययन का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि गोंड जनजातीय गीतों में परंपरा और आधुनिकता का सह-अस्तित्व गोंड समाज की सांस्कृतिक लचीलापन और अनुकूलन क्षमता को दर्शाता है। यह शोध न केवल लोकगीतों के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में सहायक होगा, बल्कि जनजातीय संस्कृति के बदलते स्वरूप को समझने में भी योगदान देगा। साथ ही, यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं, सांस्कृतिक योजनाकारों और नीति-निर्माताओं के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

इस प्रकार, छिंदवाड़ा जिले के गोंड जनजातीय गीतों पर केंद्रित यह अध्ययन सांस्कृतिक संरक्षण, सामाजिक परिवर्तन और लोकपरंपरा के समन्वित विश्लेषण की दृष्टि से पूर्णतः औचित्यपूर्ण एवं समयसापेक्ष है। अध्ययन के उद्देश्य

1. छिंदवाड़ा जिले के गोंड जनजातीय गीतों के सांस्कृतिक स्वरूप का अध्ययन करना।
2. गोंड गीतों में निहित परंपरागत मूल्यों और विश्वासों की पहचान करना।
3. गीतों में आधुनिक जीवन के प्रभावों को समझना।
4. परंपरा और आधुनिकता के सह-अस्तित्व के सांस्कृतिक महत्व को स्पष्ट करना।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध गुणात्मक एवं वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु प्राथमिक स्रोतों में गोंड समाज में प्रचलित लोकगीत, बुजुर्गों एवं लोकगायकों से प्राप्त मौखिक जानकारी तथा सांस्कृतिक आयोजनों का अवलोकन शामिल है। द्वितीयक स्रोतों के रूप में लोकसाहित्य, जनजातीय संस्कृति से संबंधित पुस्तकों, शोध पत्रों और सरकारी सांस्कृतिक रिपोर्टों का अध्ययन किया गया है। यह शोध सांख्यिकीय विश्लेषण की अपेक्षा सांस्कृतिक अनुभूति और साहित्यिक प्रस्तुति पर केंद्रित है। गोंड जनजातीय गीतों में परंपरा का स्वरूप

गोंड जनजातीय गीतों में परंपरा का स्वरूप अत्यंत गहन, सुदृढ़ और जीवन से जुड़ा हुआ है। ये गीत गोंड समाज की सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक संरचना और धार्मिक आस्थाओं का जीवंत प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं। गोंड लोकगीत मौखिक परंपरा के अंतर्गत पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित होते रहे हैं और इसी कारण उनमें आदिम सांस्कृतिक चेतना आज भी सुरक्षित दिखाई देती है (सिंह, 2018)।

1. धार्मिक आस्था और प्रकृति-पूजन : गोंड समाज की धार्मिक चेतना प्रकृति से गहराई से जुड़ी हुई है। जंगल, नदी, पर्वत और धरती को देवतुल्य माना जाता है। यह भाव लोकगीतों में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त होता है। उदाहरण स्वरूप - “बड़ा देव बैठे डोंगर माई, नदी-नाला हरियर होई”

इन पंक्तियों में गोंड समाज की प्रकृति-पूजक परंपरा और देवी-देवताओं के प्रति आस्था का सजीव चित्रण मिलता है। यहाँ ‘बड़ा देव’ गोंड समाज के प्रमुख आराध्य देवता हैं, जो प्रकृति की रक्षा और समृद्धि के प्रतीक माने जाते हैं (सिन्हा, 2015)।

2. सामाजिक संस्कार और पारिवारिक परंपराएँ : गोंड गीतों में जन्म, विवाह और मृत्यु जैसे संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है। विशेष रूप से विवाह गीतों में सामाजिक मूल्यों, सामूहिकता और पारिवारिक परंपराओं की झलक मिलती है। एक विवाह गीत की पंक्तियाँ देखें - “ढोल बजे, मांदर गूजे, दुल्हा-दुल्हन घर में पूजे”

इस प्रकार के गीत विवाह को केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामुदायिक उत्सव के रूप में प्रस्तुत करते हैं। गीतों के माध्यम से सामाजिक अनुशासन, रिश्तों की मर्यादा और सामूहिक सहभागिता को सुदृढ़ किया जाता है (शर्मा, 2020)।

3. कृषि जीवन और श्रम-संस्कृति - गोंड समाज का जीवन कृषि और वन संसाधनों पर आधारित रहा है। लोकगीतों में खेत, फसल, वर्षा और श्रम का व्यापक वर्णन मिलता है। कृषि से जुड़े एक गीत में कहा गया है - “धान की बालि झूमे खेत में, मेहनत रंग लावे पेट में”

यह पंक्तियाँ गोंड समाज की श्रम-संस्कृति और प्रकृति पर आधारित जीवन-दृष्टि को दर्शाती हैं। श्रम को सम्मान और जीवन-निर्वाह का प्रमुख साधन माना गया है, जो गोंड परंपरा की एक महत्वपूर्ण विशेषता है (सिंह, 2018)।

4. सामूहिकता और सामाजिक एकता - गोंड जनजातीय गीत व्यक्तिगत भावनाओं तक सीमित नहीं रहते, बल्कि सामूहिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। पर्व-त्योहारों और सामाजिक आयोजनों में सामूहिक गायन और नृत्य गोंड समाज की पहचान है। एक सामूहिक गीत में यह भाव स्पष्ट होता है - “गाँव सारा एक सुर गावे, दुख-सुख सब मिल बाँटे”

इन पंक्तियों में सामाजिक एकता, सहयोग और सामूहिक जीवन-दर्शन का स्पष्ट संकेत मिलता है। यही सामूहिकता गोंड समाज की सांस्कृतिक परंपरा को सुदृढ़ बनाए रखती है (सिन्हा, 2015)।

5. नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक मूल्य - गोंड गीतों के माध्यम से नई पीढ़ी को नैतिक शिक्षा और सामाजिक मूल्य प्रदान किए जाते हैं। बुजुर्गों द्वारा गाए गए गीत बच्चों और युवाओं को जीवन के मूल सिद्धांत सिखाते हैं। उदाहरणस्वरूप - “सच्चाई धरम हमर बाट, मेहनत से उजियार हो ठाठ”

इन गीत-पंक्तियों में सत्य, परिश्रम और नैतिक जीवन को सर्वोच्च मूल्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो गोंड परंपरा की आधारशिला है (शर्मा, 2020)।

इस प्रकार गोंड जनजातीय गीतों में परंपरा का स्वरूप धार्मिक आस्था, प्रकृति-पूजन, सामाजिक संस्कार, श्रम-संस्कृति, सामूहिकता और नैतिक मूल्यों के रूप में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। ये गीत गोंड समाज की सांस्कृतिक पहचान को न केवल सुरक्षित रखते हैं, बल्कि उसे निरंतर जीवंत बनाए रखते हैं। परंपरा का यही स्वरूप गोंड लोकगीतों को सांस्कृतिक धरोहर के रूप में विशेष महत्व प्रदान करता है।

गोंड गीतों में आधुनिकता का प्रभाव

आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों के प्रभाव से गोंड जनजातीय गीतों की विषयवस्तु में उल्लेखनीय परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। पारंपरिक गीत जहाँ प्रकृति, देवी-देवताओं और सामुदायिक जीवन तक सीमित थे, वहीं आज के गीतों में आधुनिक जीवन की आकांक्षाएँ, चुनौतियाँ और अनुभव भी अभिव्यक्त होने लगे हैं। यह परिवर्तन गोंड समाज के बदलते सामाजिक-आर्थिक ढाँचे का सांस्कृतिक संकेतक है (सिंह, 2018)।

शिक्षा और आधुनिक ज्ञान के प्रति बढ़ती जागरूकता का प्रभाव कई समकालीन गोंड गीतों में दिखाई देता है। अब गीतों में विद्यालय, किताब और सीखने की महत्ता को महत्व दिया जाने लगा है। उदाहरणस्वरूप -

“किताब हाथ, सपना आँख, सीख से बदले जीवन रेखा”

इन पंक्तियों में शिक्षा को सामाजिक उन्नति और भविष्य निर्माण के साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो पारंपरिक जीवन-दृष्टि से आधुनिक चेतना की ओर बढ़ते समाज को दर्शाता है (शर्मा, 2020)।

आधुनिक आजीविका और रोजगार की धारणा भी गोंड गीतों में नए रूप में सामने आई है। कृषि और वन-आधारित जीवन के साथ अब नौकरी, मजदूरी और बाहरी कार्य-क्षेत्रों का उल्लेख भी गीतों में मिलने लगा है। जैसे -

“हाट-शहर के नवे रास्ते, मेहनत ले जाए उजले वास्ते”

यह गीत-पंक्ति गोंड समाज में बदलती आर्थिक सोच और नए अवसरों की स्वीकृति को व्यक्त करती है (सिन्हा, 2015)।

तकनीकी साधनों और आधुनिक संचार माध्यमों का प्रभाव भी गोंड गीतों में दिखाई देता है। मोबाइल, रिकॉर्डिंग और मंचीय प्रस्तुति जैसे तत्व अब गीतों की अभिव्यक्ति में स्थान पाने लगे हैं। उदाहरण के लिए -

“मोबाइल में गीत बसाया, पुरखा बोल फिर जगाया”

यह पंक्ति इस तथ्य को उजागर करती है कि आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए भी गोंड समाज अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का प्रयास कर रहा है (सिंह, 2018)।

साथ ही, आधुनिक गीतों में सामाजिक चेतना और सुधार के स्वर भी उभरने लगे हैं। स्वच्छता, समानता और सकारात्मक जीवन मूल्यों पर आधारित गीतों की रचना गोंड समाज में आधुनिक सामाजिक सोच के प्रसार को दर्शाती है। उदाहरणस्वरूप -

“साफ गाँव, स्वस्थ पहचान, यही आज का नया गाना”

इन पंक्तियों से यह स्पष्ट होता है कि लोकगीत अब केवल परंपरा के वाहक नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता के माध्यम भी बनते जा रहे हैं (शर्मा, 2020)।

इस प्रकार, गोंड गीतों में आधुनिकता का प्रभाव विषयवस्तु, प्रस्तुति और भाव-बोध तीनों स्तरों पर दिखाई देता है। यद्यपि इन गीतों में नवीन तत्वों का समावेश हुआ है, फिर भी उनकी जड़ें पारंपरिक सांस्कृतिक चेतना में ही निहित हैं। यही संतुलन गोंड जनजातीय गीतों को आधुनिक समय में भी जीवंत और प्रासंगिक बनाए रखता है।

## सांस्कृतिक महत्व

गोंड जनजातीय गीत छिंदवाड़ा जिले के गोंड समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामूहिक चेतना के सबसे सशक्त प्रतीक हैं। ये गीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक स्मृति के वाहक हैं, जिनके माध्यम से परंपराएँ, विश्वास और जीवन-मूल्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचारित होते रहे हैं। मौखिक परंपरा पर आधारित होने के कारण गोंड गीत समाज के इतिहास, अनुभव और भावनात्मक संसार को जीवित बनाए रखते हैं (सिंह, 2018)।

गोंड गीतों का सांस्कृतिक महत्व इस तथ्य में निहित है कि वे सामाजिक एकता और सामूहिक सहभागिता को सुदृढ़ करते हैं। विवाह, पर्व-त्योहार और धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर सामूहिक गायन और नृत्य गोंड समाज को एक सूत्र में बाँधते हैं। एक सामूहिक चेतना को व्यक्त करने वाली गीत-पंक्ति इस भावना को स्पष्ट करती है -

“एक सुर गावे गाँव सारा, मन जुड़ जाए, टूटे फासला।”

ऐसी पंक्तियाँ सामाजिक समन्वय और सामूहिक जीवन-दर्शन को सुदृढ़ करती हैं (सिन्हा, 2015)। सांस्कृतिक दृष्टि से गोंड गीत नैतिक शिक्षा और सामाजिक मूल्यों के संवाहक भी हैं। सत्य, परिश्रम, सहयोग, सम्मान और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता जैसे मूल्य गीतों के माध्यम से सहज रूप में समाज तक पहुँचते हैं। उदाहरणस्वरूप -

“मेहनत धरम, सच्चाई राह, यही सिखावे पुरखों चाहा।”

इन गीतों के माध्यम से नई पीढ़ी को बिना औपचारिक शिक्षा के जीवन-मूल्य सिखाए जाते हैं, जो गोंड समाज की सांस्कृतिक विशेषता है (शर्मा, 2020)।

गोंड जनजातीय गीतों का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पक्ष यह भी है कि वे प्रकृति और मानव के सह-अस्तित्व को अभिव्यक्त करते हैं। जंगल, नदी, पर्वत और धरती को गीतों में माता या देवतुल्य रूप में चित्रित किया जाता है। यह दृष्टिकोण पर्यावरण-संरक्षण की पारंपरिक चेतना को दर्शाता है, जो आधुनिक संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक है (सिंह, 2018)। इस प्रकार, गोंड गीत पर्यावरणीय संस्कृति के भी वाहक हैं।

आधुनिक संदर्भ में गोंड गीतों का सांस्कृतिक महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि ये परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य करते हैं। आधुनिक प्रस्तुति शैलियों, मंचीय कार्यक्रमों और डिजिटल माध्यमों के माध्यम से ये गीत नई पीढ़ी तक पहुँच रहे हैं, जिससे सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है। एक आधुनिक चेतना से युक्त पंक्ति इस परिवर्तन को दर्शाती है -

“नया समय, नया सुर लाया, पुरखा गीत न भूला पाया।”

यह गोंड समाज की सांस्कृतिक अनुकूलन क्षमता को उजागर करता है (शर्मा, 2020)।

समग्र रूप से देखा जाए तो गोंड जनजातीय गीत छिंदवाड़ा जिले के गोंड समाज के सांस्कृतिक जीवन का मूल आधार हैं। ये गीत सामाजिक एकता, नैतिक शिक्षा, पर्यावरणीय चेतना और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परंपरा और आधुनिकता के संतुलन के साथ ये गीत आज भी गोंड समाज की जीवंत संस्कृति के प्रतीक बने हुए हैं।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि छिंदवाड़ा जिले के गोंड जनजातीय गीत केवल लोक-अभिव्यक्ति का साधन नहीं हैं, बल्कि वे समाज की सांस्कृतिक स्मृति, सामूहिक चेतना और जीवन-दर्शन के सशक्त वाहक हैं। इन गीतों के माध्यम से गोंड समाज अपनी परंपराओं, सामाजिक मूल्यों, धार्मिक आस्थाओं और प्रकृति के प्रति अपने गहरे संबंध को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित करता आ रहा है (सिंह, 2018)। अध्ययन में यह भी सामने आया है कि गोंड गीतों में परंपरा का स्वरूप आज भी सुदृढ़ रूप में विद्यमान है। देवी-देवताओं की आराधना, प्रकृति-पूजन, सामाजिक संस्कार, श्रम-संस्कृति और सामूहिकता जैसे तत्व गोंड गीतों की मूल संरचना बने हुए हैं (सिन्हा, 2015)। ये तत्व गोंड समाज की सांस्कृतिक पहचान को स्थायित्व प्रदान करते हैं और उसे उसकी जड़ों से जोड़े रखते हैं। साथ ही, आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों जैसे शिक्षा का प्रसार, शहरी संपर्क, रोजगार की आकांक्षा और तकनीकी साधनों के उपयोग, का प्रभाव भी गोंड गीतों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आधुनिक विषयवस्तु और प्रस्तुति शैलियों के समावेश से यह सिद्ध होता है कि गोंड लोकगीत स्थिर नहीं हैं, बल्कि समय के साथ स्वयं को अनुकूलित करने की क्षमता रखते हैं (शर्मा, 2020)। इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि गोंड जनजातीय गीतों में परंपरा और आधुनिकता परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि सह-अस्तित्व में हैं। परंपरा गीतों को सांस्कृतिक आधार और पहचान प्रदान करती है, जबकि आधुनिकता उन्हें समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक बनाए रखती है। यही संतुलन गोंड समाज की सांस्कृतिक लचीलापन और जीवंतता का परिचायक है (सिंह, 2018)।

अंततः यह कहा जा सकता है कि छिंदवाड़ा जिले के गोंड जनजातीय गीतों का संरक्षण और संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। ये गीत न केवल सांस्कृतिक धरोहर के रूप में महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सामाजिक एकता, नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में भी अहम भूमिका निभाते हैं। भविष्य में यदि इन गीतों का प्रलेखन, अध्ययन और प्रचार-प्रसार किया जाए, तो यह न केवल गोंड समाज की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करेगा, बल्कि भारतीय लोक संस्कृति के व्यापक अध्ययन में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

संदर्भ सूची -

1. सिंह, कल्याण. मध्य भारत के लोकगीत. लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. 45-78.
2. सिन्हा, रामप्रसाद. गोंड संस्कृति और लोकपरंपराएँ. जनजातीय अनुसंधान संस्थान, भोपाल, 2015, पृ. 62-104.
3. शर्मा, प्रदीप कुमार. आदिवासी लोकगीत और सामाजिक परिवर्तन. जनजातीय अध्ययन प्रकाशन, रायपुर, 2020, पृ. 31-66.

4. तिवारी, श्यामसुंदर. भारतीय लोक संस्कृति. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 201-238.
5. उपाध्याय, गोपाल नारायण. लोकगीत और लोकजीवन. हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज, 2014, पृ. 90-132.
6. वर्मा, शिवकुमार. मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति. मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2017, पृ. 55-96.
7. मिश्र, अवधेश कुमार. आदिवासी समाज और संस्कृति. लोकसंस्कृति प्रकाशन, वाराणसी, 2013, पृ. 118-156.
8. मध्यप्रदेश शासन. छिंदवाड़ा जिले की जनजातीय संस्कृति. आदिवासी विकास निदेशालय, भोपाल, 2022, पृ. 15-54.

